९. लखनवी अंवाज़

कहानी का सारांश

यह व्यंग्यात्मक रचना लखनऊ की तहज़ीब, नफ़ासत और दिखावटी रईसी की झलक प्रस्तुत करती है। लेखक एक बार मुफ़स्सिल की पैसेंजर ट्रेन में सफ़र कर रहे थे। भीड़ से बचने और एकांत में सोचने के लिए उन्होंने सेकंड क्लास का टिकट लिया। डिब्बे में प्रवेश करते ही वे देखते हैं कि वहाँ पहले से ही एक नवाबी नसल के सफ़ेदपोश सज्जन पालथी मारे बैठे हैं और सामने ताज़े खीरे रखे हुए हैं।

पहले तो नवाब साहब लेखक की मौजूदगी से असहज महसूस करते हैं, परंतु फिर औपचारिक शिष्टाचार निभाते हुए खीरा खाने का निमंत्रण देते हैं। लेखक मना कर देते हैं। इसके बाद नवाब साहब बहुत नफ़ासत और करीने से खीरों को धोते, छीलते, काटते, नमक-मिर्च छिड़कते और उनकी खुशबू व स्वाद का रसास्वादन करते हैं। किंतु वे एक भी फाँक खाते नहीं, बल्कि प्रत्येक फाँक को सूंघकर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं। अंत में तृप्ति का भाव दिखाते हुए डकार भी लेते हैं और गर्व से लेखक की ओर देखते हैं।

लेखक समझ जाते हैं कि यह खानदानी रईसों की दिखावटी तहज़ीब और नफ़ासत का प्रतीक है। इस व्यंग्यपूर्ण घटना से लेखक 'नयी कहानी' की अवधारणा पर कटाक्ष करते हैं कि जैसे नवाब साहब केवल खीरे की सुगंध और कल्पना से तृप्त हो जाते हैं, वैसे ही कुछ लेखक बिना कथानक, घटना और पात्रों के भी कहानी गढ़ लेते हैं।

मुख्य बिंदु:

- लखनऊ की रईसी और नफ़ासत का व्यंग्यात्मक चित्रण।
- नवाब साहब का खीरे खाने का अनोखा और दिखावटी अंदाज़।
- खानदानी तहज़ीब में आडंबर और बनावट की झलक।
- "नयी कहानी" आंदोलन पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी।

शब्दार्थ

- **मुफस्सिल** - केंद्रीय नगर के इर्द-गिर्द के स्थान
- **सफ़ेदपोश** - भद्र व्यक्ति
- **उतावली** - बेचैनी
- **प्रतिकूल** - विपरीत
- **निर्जन** - खाली स्थान
- **एकांत-चिंतन** - अकेले में सोचना
- **विघ्न** - बाधा
- **अपदार्थ-वस्तु** - सामान्य-चीज
- **आत्मसम्मान** - स्वाभिमान
- **किफ़ायत** - मितव्ययता, कम खर्च करना
- **कनखियों** - तिरछी नज़र से देखना
- **आदाब अर्ज** - अभिवादन करना
- **भाव-परिवर्तन** - भाव (विचारों) में परिवर्तन
- **भाँप लेना** - समझ जाना

- **शराफ़त** - सज्जनता, शालीनता
- **गुमान** - घमंड
- **लथेड़ लेना** - ज़बरदस्ती सम्मिलित करना
- **क़िब्ला** - आप (सम्मानसूचक शब्द)
- **दृढ़ निश्चय** - मज़बूत विचार
- **एहतियात** - सावधानी
- **करीने से** - अच्छी तरह से सजाना
- **बुरकना** - छिड़कना
- **भाव-भंगिमा** - चेहरे के हाव-भाव
- **स्फुरण** - फड़कना
- **प्लावित होना** - पानी भर जाना
- **असलियत** - वास्तविकता
- **वल्लाह** - क़सम से
- **पनियाती** - पानी छोड़ती
- **तसलीम** - सम्मान में
- **तहजीब** - शिष्टता
- **नफ़ासत** - स्वच्छता
- **नज़ाकत** - कोमलता
- **नफ़ीस** - बढ़िया
- **एब्स्ट्रैक्ट** - सूक्ष्म, जिसका भौतिक अस्तित्व न हो, अमूर्त
- **सक़ील** - आसानी से न पचने वाला
- **तलब महसूस होना** - इच्छा करना
- **सतृष्ण** - इच्छा सहित
- **दीर्घ-निश्वास** - लंबी श्वास

मुहावरे

- **आँखें चुराना** - बचने का प्रयास
- **खाली बैठना** - कुछ काम न करना
- **गवारा न होना** - स्वीकार न होना
- **गौर करना** - ध्यान देना
- **मुँह में पानी आना -** जी ललचाना
- **सिर खम करना** - सिर झुकाना
- **पलकें मूँदना** - आँखें बंद कर लेना

www.onepointlearning.com

प्रश्न - अभ्यास

1. **लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?**

   उत्तर: जब लेखक ट्रेन के डिब्बे में चढ़े, तो उन्होंने देखा कि नवाब साहब पहले से ही वहाँ बैठे थे। लेखक के अचानक डिब्बे में आ जाने से नवाब साहब की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। उन्होंने लेखक के साथ बातचीत करने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया और उनकी ओर से मुँह फेर लिया। इन हाव-भावों से लेखक को यह महसूस हुआ कि नवाब साहब उनसे बात करने के इच्छुक नहीं हैं।

2. **नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूंघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?**

   उत्तर: नवाब साहब ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे लेखक के सामने अपनी नवाबी और शराफत का प्रदर्शन करना चाहते थे। वे दिखाना चाहते थे कि वे इतने रईस हैं कि मामूली खीरा भी नहीं खाते। खीरे को इतनी सावधानी से तैयार करने के बाद भी उसे सूंघकर फेंक देना उनके दिखावे और झूठी शान के स्वभाव को दर्शाता है। वे आत्मसम्मान के नाम पर अपनी असली भूख को दबा देते हैं और लोगों के सामने अपनी कृत्रिम प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

3. **बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?**

   उत्तर: यशपाल का यह विचार व्यंग्य है। वे यह कहना चाहते हैं कि जिस तरह नवाब साहब खीरे को सूंघकर पेट भर जाने का दिखावा कर रहे थे, उसी तरह आज के कुछ लेखक भी बिना किसी ठोस विचार, घटना और पात्रों के केवल कल्पना के आधार पर कहानियाँ लिखने का दावा करते हैं। मैं इस विचार से पूर्णतः सहमत हूँ कि एक सार्थक और प्रभावशाली कहानी लिखने के लिए विचार, घटनाएँ और पात्र अत्यंत आवश्यक हैं। इनके बिना कोई भी कहानी अधूरी और बेजान होती है। यशपाल इस व्यंग्य के माध्यम से नई कहानी आंदोलन के कुछ लेखकों की सतही लेखन शैली पर कटाक्ष कर रहे हैं।

4. **आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?**

   उत्तर: इस निबंध को दिए जा सकने वाले कुछ अन्य नाम इस प्रकार हैं:

   - दिखावे की ज़िन्दगी
   - नवाबों की सनक
   - शराफत का बोझ
   - नवाबी तहज़ीब

रचना और अभिव्यक्ति

5. **(क) नवाब साहब द्वारा खीर खाने की तैयारी करने का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।**

   उत्तर: नवाब साहब ने खीरा खाने के लिए बहुत ही सावधानी से तैयारी की। सबसे पहले, उन्होंने अपनी सीट के नीचे से लोटा उठाया और खीरों को खिड़की के बाहर धोया। फिर, तौलिए से उन्हें पोंछकर उन्होंने अपनी जेब से चाकू निकाला। उन्होंने खीरों के सिर को काटकर, रगड़कर उनका झाग निकाला। इसके बाद, उन्होंने खीरों को बहुत ही करीने से छीला और उनकी फाँकों को तौलिये पर सजाया। अंत में, उन्होंने उन पर जीरा-मिला नमक और लाल मिर्च छिड़क दी।

   (ख) किन-किन चीजों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

   उत्तर: किसी भी चीज़ का रसास्वादन करने के लिए उसकी तैयारी का भी विशेष महत्व होता है। उदाहरण के लिए, यदि मुझे चाट का रसास्वादन करना हो, तो मैं सबसे पहले आलू उबालकर उन्हें मसलूँगा। फिर, उसमें कटी हुई प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, धनिया, और विभिन्न मसाले जैसे नमक, लाल मिर्च, अमचूर आदि मिलाऊँगा। इसके बाद, ऊपर से मीठी चटनी, हरी चटनी और नींबू का रस डालकर उसे खाने के लिए तैयार करूँगा।

6. **खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों की और भी सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा। किसी एक के बारे में लिखिए।**

   उत्तर: नवाबों की सनकें और शौक अक्सर उनके ठाठ-बाठ और दिखावे से जुड़े होते थे। एक मशहूर कहानी के अनुसार, लखनऊ के एक नवाब को अंधेरे में जुलाहों का काम देखने का शौक था। वे जुलाहों को बुलाकर रात के अँधेरे में उनसे कपड़े बुनवाते थे और उन्हें देखना पसंद करते थे। यह शौक भी नवाब साहब की खीरे वाली सनक की तरह ही था, जिसमें काम से ज़्यादा दिखावा और अनोखेपन को महत्व दिया जाता था।

7. **क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।**

   उत्तर: हाँ, सनक का सकारात्मक रूप भी हो सकता है। जब किसी व्यक्ति की सनक किसी अच्छी आदत या जुनून के रूप में सामने आती है, तो वह बहुत फायदेमंद हो सकती है। उदाहरण के लिए:

   - **किताबें पढ़ने की सनक:** अगर किसी व्यक्ति को किताबें पढ़ने की सनक है, तो वह बहुत ज्ञानी बन सकता है और अपने ज्ञान से दूसरों को भी लाभ पहुँचा सकता है।
   - **फिटनेस की सनक:** किसी को अगर अपनी सेहत का बहुत ख्याल रहता है और उसे फिट रहने की सनक है, तो वह न केवल खुद स्वस्थ रहेगा बल्कि दूसरों को भी फिट रहने के लिए प्रेरित करेगा।

www.onepointlearning.com

भाषा- अध्ययन

8. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद छाँटकर क्रिया-भेद भी लिखिए:

(क) एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।

- → **क्रियापद:** बैठे थे
- → **क्रिया-भेद:** अकर्मक क्रिया

(ख) नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।

- → **क्रियापद:** दिखाया
- → **क्रिया-भेद:** सकर्मक क्रिया

(ग) टाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।

- → **क्रियापद:** है
- → **क्रिया-भेद:** अकर्मक क्रिया

(घ) अकेले सफर का वक़्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।

- → **क्रियापद:** खरीदे होंगे
- → **क्रिया-भेद:** सकर्मक क्रिया

(ङ) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।

- → **क्रियापद:** काटे, निकाला
- → **क्रिया-भेद:** सकर्मक क्रिया

(च) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा।

- → **क्रियापद:** देखा
- → **क्रिया-भेद:** सकर्मक क्रिया

(छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।

- → **क्रियापद:** लेट गए
- → **क्रिया-भेद:** अकर्मक क्रिया

(ज) जेब से चाकू निकाला।

- → **क्रियापद:** निकाला
- → **क्रिया-भेद:** सकर्मक क्रिया

www.onepointlearning.com